



سورہ بانی ہسراٹل مالککٹیا

نامسے اءللاہکے ہذا مالہرہان ہاشنہوالا

آیاات ۱۱۹ رۛکۛ ۱۲

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ

پاکی اءسکی، جو لے گیا اپنے ہنڈےکو راتوں رات، ماسجیڈے ہرامسے

إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْآيَاتِ ۗ

ماسجیڈے اءکسا تک، کی ہرکت رہی ہے ہمنے جسکے گیلڈا گیلڈا، تاکہ اءنکی رشمہیڈ کرہے اپنی نیشانیوں۔

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝۱ وَأَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ

ہشک وول سونتا ڈہاتا ہے (۱) اور ڈیا ہمنے مھساکو کیتاہ، اور کر ڈیا ہمنے

هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا تَنَجُّدٌ وَأَمِنَ دُونِي وَكَيْلًا ۝۲

اےسے ڈیڈایت ہنی ہسراٹلکے لیہے، کی ن ہناو موزکو اوس کر کوڈ کارساا (۲)

ذُرِّيَّةً مِّنْ حَمَلِنَا مَعَ نُوحٍ ۗ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝۳ وَ

اے اءنکی اوواڈ جنکو ہمنے کشتی پر سوار کرایا نھڈکے ساہ، ہشک وول شुकगुआर ہنڈے تھے (۳) اور

قَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ

پہغام ہسج ڈیا ہمنے ہنی ہسراٹلکے ترک کیتاہہمے، کی اڑر ہساڈ مہااوغے توم ازمیہمے

مَرَّتَيْنِ وَلِتَعْلَنَ أُولُو كَيْبَرٍ ۗ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهِمَا بَعَثْنَا

ڈوبار، اور اڑر مگڑر اےسے اہےسے مھتکھمہر (۴) یونانہے جب آا گیا اءنمےکا پھلا وا'ڈا، ہسج ڈیا ہمنے

عَلَيْكُمْ عِبَادَ النَّارِ أُولَىٰ بِأْسِ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَ

توم پر اپنے کھٹ ہنڈےکی سہت جگجگ، تو وول تہاشیکی ڈوس پڈے شہرےکے انڈر، اور

كَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۝۵ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ

ہڈ تہشڈا وا'ڈا تہا (۵) ڈیر واپس لااے ہم تومڈے ڈوبارا اءن پر، اور مہڈ ہرماٹ تومڈاری

بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاهُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝۶ إِن أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنَتْكُمْ

مال و اوواڈسے، اور کر ڈیا ہمنے تومڈے ہڈے جٹھہوالا (۶) अगर तमने ललललकी, तो अपनी लललल

لَا نَفْسِكُمْ ۗ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۗ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ

کی... اور अगर भुरलकी तो अपने लिलेकी. डिर जब आ गया दूसरे हसाडका वा'डा, ताकि दुशमन ललगल डे

وَجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا

تुम्हारे चेहरे, और ताकि दाभिल हों मस्जिदमें जिस तरफ दाभिल हूँ थे पहली बार, और ताकि पुन ही तबाह कर

مَاعَلَوْا تَبْيِيرًا ۝ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنَّ عُذَّتُمْ

हैं जिस चीज पर काबू पाओ (७) मुम्किन है कि तुम्हारा परवरदिगार अब भी तुम पर रहम करमाओ. और अगर फिर शरारत पर पलटे, तो

عُدَّتُمْ ۚ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ

हम भी अजाबको फिर लाओ... और बना दिया हमने जहन्नमको काकिरोंका डेढपाना (८) बेशक यह कुरआन

يَهْدِي لِكَلِمَةٍ هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ

राह दिभाता है जो सबसे ज़्यादा सीधी है, और मुज़्दा देता है अपने माननेवालोंको, जो अमल करें

الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝ ۙ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ

लियाकतवाला, कि बेशक उनके लिये बडा षवाब है (९) और बेशक जो न मानें

بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ وَيَدْعُ الْإِنْسَانَ بِالسُّرْرِ

आभिरतको, मुल्थ्या करमा लिया हमने उनके लिये दुभ देनेवाला अजाब (१०) और कोसते हैं बा'ज लोग तबाहीके लिये

دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَ

जैसे हुआ हो भलाईके लिये. और ई-सान बडा जल्द बाज है (११) और बनाया हमने रात और

النَّهَارَ آيَاتِينَ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً

दिनको दो निशानियां, युना-चे मिटी मिटी धुंदली रभी हमने रातकी निशानी, और कर दिया दिनकी निशानीको भुलती दिभाती,

لِتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابِ

ताकि तलाश करो अपने परवरदिगारका फ़ज़ल, और ताकि जानते रहो हर हर सालके शुमारको और हिसाबको.

وَكُلِّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۝ وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْمَنَّا بِطَيْرِهِ

और हर चीज़की हमने अलग अलग तफ़सील कर दी है (१२) और सारे ई-सान, हमने उनकी किस्मतकी उनके गले

فِي عُنُقِهِ ۚ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝

में ईंदा कर दिया. और बरआमद करेंगे उसके लिये कयामतके दिन नविशता, जिसे पायेगा भुला हुआ (१३)

إِقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝

कि पढ, अपना नामओ आमाव. काई है तू ही आज अपने ठीपर हिसाब करनेको (१४) जिसने

اهْتَدَى قَائِمًا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ قَائِمًا يَضِلُّ

राह पाठ तो अपने ही लिये पाठ. और जिसने भेराहीकी, तो अपने भुरेकी भे

عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ

राहीकी. और कोई भोज उठानेवाली जान दूसरेका भोज न उठायेगी. और हम नहीं हैं अजाब भेजनेवाले

حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۗ وَإِذَا آرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمْرًا

यहां तक कि भेज दें रसूलको (१५) और जब हमने याहा कि तबाह कर दें किसी आबादीको, तो हुकम दिया हमने

مُتَرَفِّفِيهَا فَنَفْسُوهَا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَا تدميراً ۗ

उसके औशवालोंको, तो उनोंने उसमें नाकरमानीकी, तो दुरुस्त हो गठे उन पर बात, तो हमने तबाह कर दिया बरबाद करके (१६)

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ

और कितने तबाह कर दिये हमने तबके नूहके आ'द. और तुम्हारा परवरदिगार

بِدُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۗ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ

अपने बन्दोंके गुनाहोंसे काही भबरदार व निगरां है (१७) जिसने जल्दवाली दुन्या याही

عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِنَمُنُّ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ

हमने जल्दी कर दी उसके लिये, उसमें जो चाहें जिसके लिये चाहें, फिर कर दिया हमने उसके लिये जहन्नम.

يَصَلُّهَا مَذْمُومًا مَدْحُورًا ۗ وَمَنْ آرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ

कि जाये वहां भुरा केहलाता, रांठये दरगाह (१८) और जिसने याहा आभिरतको और उसके लिये

لَهَا سَعِيهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعِيهِمْ مَشْكُورًا ۗ

कोशिशकी उसके काबिल, और वोह ईमानवाला, तो वोह हैं कि जिनकी कोशिश काबिले कर है (१८)

كَلَّا نَبْدُ هُوَ أَوْلَىٰ ۗ وَهُوَ أَوْلَىٰ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۗ وَمَا كَانَ عَطَاءُ

सभीकी हम मदद इरमाते हैं, इनकी और उनकी, तुम्हारे परवरदिगारकी अतासे. और नहीं है तुम्हारे

رَبِّكَ فَحَظُورًا ۗ أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۗ

परवरदिगारकी अता पर पाबन्दी (२०) देख लो कि कैसे बढा रभा है हमने आ'लको आ'ल पर.

وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ۗ لَا يُجْعَلُ مَعَ اللَّهِ

और बिलाशुभल आभिरत सब दरजोंमें बडी है, और बडाईमें सभसे बडी है (२१) मत गढो अल्लाहके साथ

إِلٰهَا آخَرَ فَتَقَعْدَ مَدْمُومًا فَخُذْ وَلَا ۗ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا

دूसरा मा'भूद, कि बैठे रह जाओ भुरे केडवाते रुस्वा (२२) और ईसला करमा दिया तुम्हारे परवरदिगार

تَعْبُدُ إِلَّا إِلَٰهًا ۗ وَ يَا لَوِ الدِّينَ إِحْسَانًا ۗ إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِندَكَ

ने, कि न पूजो मगर उसीको, और मां-बापसे भलाई करनेका, अगर पहुँच जाओ तुम्हारे

الْكِبْرَ أَحَدٌ هُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٍ وَلَا تَنْهَرْهُمَا

सामने बुझापेको, उनमेंका ओक या दोनों, तो मत केडना उन्हें “हांका हूं, और न उन्हें छिडकना,

وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۗ ۝۳۳ وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الدَّلِّ مِنَ

और बोलना उनसे धुलत करनेवाली बोली (२३) और बिछा देना उनके लिये अपनी छोटायका भाऊ,

الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۗ رَبُّكُمْ

उमदईसि, और दूआ करते रहो कि परवरदिगार उन दोनों पर रहम करमा, जैसा कि पाला उन्होंने मुझे कमसिनीमें” (२४) तुम्हारा परवरदिगार

أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۗ إِنَّ تَكُونُوا صٰلِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ

जानता है जो तुम्हारे दिलोंमें है. अगर तुम लोग लियाकत मन्द होगे, तो बिलाशुभल वोल तौबा करनेवालों

لِلذَّٰلِقِينَ غَفُورًا ۗ ۝۳۴ وَأْتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسْرِينَ وَ

को भ्रश देनेवाला है (२५) और दो कराभतवालोंको उनका डक, और पाना भरबादको, और

ابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبْدِرْ تَبْدِيرًا ۗ ۝۳۵ إِنَّ الْمُبْدِرِينَ كَانُوا

मुसाफिरको, और न उडाओ हुजूल (२६) भेशक हुजूल भरखवाले

إِخْوَانَ الشَّيْطٰنِ ۗ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۗ ۝۳۶ وَإِمَّا

शैतानोंके भाईभंड हैं. और शैतान अपने परवरदिगारका नाशुका है (२७) और अगर उन

تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ

से अ'राज करना पडे, छन्तिजारमें अपने परवरदिगारकी रहमतके, जिसकी तुम्हें उम्मीद है, तो बोवो उनसे

قَوْلًا مَّيْسُورًا ۗ ۝۳۷ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا

आसान बोवी (२८) और न कर रभो अपने हाथको बंधा हुवा अपनी गरदनसे, और

تَبْسُطَهَا كُلِّ البَسِطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ۗ ۝۳۸ إِنَّ رَبَّكَ

न भोल ही दो बिल्कुल, कि बैठना पडे अइसोस व उसरत करते (२९) भेशक तुम्हारा परवरदिगार

يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا

वसीअ कर देता है रोजी जिसके लिये चाहे, और वोही अन्दाजे भर कर देता है, बेशक वोह अपने बन्दोंका भबरगीर

بَصِيرًا ۳۰ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ مِّنْ نَّرْزُقِهِمْ

व निगरां है (३०) और तुम लोग न मार डाला करो अपनी औलादको, तंगदस्तीके भतरसे. हम उनको रोजी दें

وَأَيَّاكُمْ إِن تَقْتُلَهُمْ كَانَ خِطَاً كَبِيرًا ۳۱ وَلَا تَقْرَبُوا الرِّزْقَ

और तुम्हें भी. उनको मार डालना बडा गुनाह है (३१) और पास न जाओ बढकारीके,

إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۳۲ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي

बेशक यह बेशर्मा है. और बुरी राह है (३२) और न मार डालो किसी जानको, कि

حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا

हुर्मत रभी जिसकी अल्लाहने मगर हकसे. और जो मार डाला गया बेगुनाह, तो हमने हक दिया

لِوَالِيهِ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۳۳

उसके वारिषको, तो वोह भी जियादती न करे क्तल करनेमें. कि उसकी मदद कर दी गई है (३३)

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ

और पास न इटको यतीमके मालके मगर बेरभवाडाना तरीकेसे, यहां तक कि जब पडोंय जायें

أَشْدٰهُ ۗ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۗ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۳۴ وَأَوْفُوا

अपनी पूरी ताकतको, और पूरा करते रहो तुम लोग अहदको, बेशक अहदकी बाजपुर्स होगी (३४) और पूरी

الْكَيْلَ إِذَا كَلَّمْتُمْ وَرَبُّوْا بِالْقِسْطِ السُّتْقِيمِ ۗ ذٰلِكَ خَيْرٌ

नाप रभो, जब नापो और तोलो, हीक तराजूसे. यह बडोत बेडतर है,

وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۳۵ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ

और बुश अ-जाम है (३५) और न पीछे पडो जिसका तुम्हें एल्म नहीं. बेशक कान

وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولٰٓئِكَ كَانَ عِنْدَهُ مَسْئُولًا ۳۶ وَلَا تَمْسَسْ

और आंभ और दिल, एन सबकी बाजपुर्स होगी (३६) और मत चलो

فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۗ إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ

जमीनमें एतराते हूअे. बिलाशुबह न तो तुम इंस सकोगे जमीनको, और न बढ कर पडास हो जाओगे

طُولًا ۳۰ كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۳۱ ذَلِكِ

لَمَّا آثَمْتُمْ فِي كُفْرِكُمْ ۳۲ وَمَا تَعْبَهُوا مِنْ خَلْقِ أَهْلِ الْأَرْضِ إِلَّا كَمَا خَلَقْتُمُوهُمْ وَمَا تَكْفُرُونَ بِهِ ۳۳ وَمَا تَكْفُرُونَ بِهِ إِلَّا أَنْفُسُكُمْ أَنْتُمْ لَكُمْ يَوْمَئِذٍ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۳۴

مِمَّا آوَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا

أَخْرَفْتَلْفَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ۳۵ أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُمْ

بِالْبَنِينَ وَالْمَنَاجِدِ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا

عَظِيمًا ۳۶ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا

يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۳۷ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا

لَا يَتَّبِعُوا إِلَى ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۳۸ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا

يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۳۹ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ

وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا

تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۴۰ وَإِذَا قَرَأْتَ

الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ

حِجَابًا مَّسْتُورًا ۴۱ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَ

جَعَلْنَا فِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۴۲ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ

مُذْهِبٍ ۴۳ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۴۴ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۴۵

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۴۶ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۴۷

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۴۸ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۴۹

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۰ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۱

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۲ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۳

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۴ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۵

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۶ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۷

وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۸ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِهِمْ كِتَابًا غَيْرَ مُذْهِبٍ ۵۹

فِيٰ اِذَا نِيَهُمْ وَقَرَأُوْا وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحَدَّثَهُ وَتَوَا

उनके कानोंमें बहरापन. और जब जिक्र किया तुमने अपने अकेले परवरदिगारका कुरआनमें, पलट

عَلَىٰ اَدْبَارِهِمْ نَفُوْرًا ۝۳۷ مَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمْعُوْنَ بِهٖ اِذْ يَسْتَمْعُوْنَ

पडे पीछे ફेरे, नफरत करते (४६) हम भुब जानते हैं जिसके लिये वोह सुनते हैं, जब वोह तुम्हारी तरफ

اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ يُجْوٰى اِذْ يَقُوْلُ الظَّالِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا

कान करते हैं, और जब वोह बुझिया मशवरा करते हैं, जब कि यह जालिम बका करते हैं, कि तुम नही घेरवी करते मगर अक

مَسْحُوْرًا ۝۳۸ اَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا الْكَالِمَ اَلَمْ تَكُنْ اَوْفًا فَلَ

जाहू मारे शप्सकी (४७) देखो तो कैसी मिघाल बनाई तुम्हारे लिये, युना-चे लटक गये, कि

يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝۳۹ وَقَالُوْا اِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرَفًا نَّآءِ اِنَّا

राह नही पा सकते (४८) और सब यह भी बके, कि “क्या जब हो युके उड़ियां और यूरा, तो क्या हम

لَسَبْعُوْتُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝۴۰ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ۝

वाकई उठाये जायेंगे अज सरे नव पैदा कर के ?” (४९) जवाब दे दो कि तुम पथर हो जाओ या वोडा (५०)

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُعِيْدُنَا

या कोई मखूक जो बडी हो तुम्हारे दिलोंमें, तो वोह जल्दीसे पूछेंगे कि कौन हमें दोबारा पैदा करेगा.

قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ

जवाब दो कि जिसने पैदा करमाया था तुम्हें पहली मरतबा. तो जल्दीसे वोह अपनी अपनी भोपडी खिलाखिला कर

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ قُلْ عَسٰى اَنْ يُّكُوْنَ قَرِيْبًا ۝۴۱ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ

रहेंगे और कहेंगे, कि यह कब. बताओ कि क्या बरह है कि वोह करीब ही हो (५१) जिस दिन पुकारेगा

فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَنْظُوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۴۲ وَقُلْ

तुम्हें, तो ता'मील करोगे उसकी उम्ह करते हूँ, और करार दोगे कि तुम नही ठहरे कही मगर कम (५२) और भेरे

لِعِبَادِيْ يَقُوْلُوْا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۗ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزِعُ بَيْنَكُمْ

सभ्ये बन्दोंसे डेह दो, कि बोला करें जो सभसे ज़यादा भुशगवार बोली हो. बेशक शैतान कोंचे देता है उनमें.

اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ۝۴۳ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ

बेशक शैतान जनमसे ईन्सानका भुला दुश्मन रहा (५३) तुम लोगोंका परवरदिगार तुम्हें भुब जानता है.

إِنْ يَشَاءِ رَبُّكُمْ أَوْ إِنْ يَشَاءُ يُعَذِّبْكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكُمْ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٧﴾

अगर चाहे तुम लोगोंको बप्श दे, या अगर चाहे तो अजाब करमाओ. और नही भेजा हमने तुमको उनका जिम्मेदार जवाबदेह (५४)

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ

और तुम्हारा परवरदिगार भुब जाने, जो आस्मानोंमें और जमीनमें हैं, और बेशक फ़ज़ीलत दी हमने बा'ज

النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ﴿٥٨﴾ قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ

नबियोंको बा'ज पर. और दिया हमने दावूदको ज़बूर (५५) केह दो कि पुकार देभो उन्हें जो अल्लाह

رَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِهِمْ فَلَا يَسْتَكُونُ كَسَفِ الضَّرِّ عَنْكُمْ وَلَا

के मुकाबिल हैं तुम्हारे नज़दीक, तो न इत्तिवार रहते हैं नुकसान दूर करनेका तुमसे, और न

تَحْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ

वीटा देनेका (५६) वोह मकभूल लोग जिन्हें कुक़र मा'बूद पुकारते हैं, वोह भुद याहते हैं अपने परवरदिगारकी तरफ़ वसीला,

أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَ إِنْ عَذَابِ

कि उनका कौन सबसे ज़्यादा नज़दीकी है, और उम्मीदवार हैं उसकी रहमतके, और उरें उसके अजाबको. बेशक तुम्हारे

رَبِّكَ كَانَ هَدًى ذُرًّا ﴿٦٠﴾ وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا

परवरदिगारका अजाब जनमसे बयनेकी थीज रही (५७) और कोरि आबादी नही, मगर हम हैं उसको तबाह करनेवाले

قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ

रोज़े कयामतसे पहले, या उसमें अजाब भेजनेवाले, सप्त अजाब. और यह

فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٦١﴾ وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ

किताबमें बराबर लिखा रहा (५८) और नही रोका हमें उससे कि भेजें हम आभिरी निशानियां, मगर इस

كَدَّبَ بِهَا الْكَافِرُونَ ﴿٦٢﴾ وَآتَيْنَا شُودَ النَّاقَةِ مَبْصُرَةً فُظِّلُوا

भातने कि जुटवा चुके हैं उसको अगले लोग. और दे दिया था हमने धमूदको ठीटनी, कि आंभ भोल दे. तो उन्होंने अंधेर

بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَحْوِيلًا ﴿٦٣﴾ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ

मयाया उसकेसाथ. और हम नही भेजा करते निशानियोंको मगर उरानेकेलिये (५९) और जबाकि कडा हमने तुमको कि बिलाशुभल तुम्हारा परवरदिगार

أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرَّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً

छा गया है सब लोगों पर, और नही बनाया हमने तुम्हारे इस प्वाबको जो तुम्हें दिभाया, मगर लोगोंकी आजमाईश,

لِّلنَّاسِ وَ الشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۖ وَنُحُوفُهُمْ ۖ فَمَا

और वोड दरफत जिसको मल्लिन कडा गया है कुरआनमें और डम तो उनहें डराते हैं. नहीं

يَزِيدُهُمْ إِلَّا طَعْيَانَا كَبِيرًا ۖ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكِ اسْجُدْ لِلدَّمِ

बढती उनमें मगर बडी सरकशी (६०) और जब कि डुकुम दिया डमने इरिशतोंको कि सजदा करो आडमका,

فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ قَالَ أَسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۖ قَالَ

तो सभने सजदा किया, मगर ईब्लिस. बोला “कि क्या मैं सजदा करूं उसका, जिसे पैदा इरमाया तूने भाक से?” (६१) बोला कि

أَرَأَيْتَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنِ أَخَّرْتَنِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

देभ तो सही, तूने उसको ईज्जत बफ्श दी मुज पर. अख्श अगर मोडलत देदी तूने मुजे रोजे कयामत तक

لَأَحْتَنِكَ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۖ قَالَ أَذْهَبَ مَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

की, तो ज़रूर दाभ लूंगा उनकी औलादको, मगर थोडे” (६२) इरमान हुवा “ज! तो जिसने गुलामीकी तेरी

فَأَنْ جَهَنَّمَ جَزَاءُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُورًا ۖ وَاسْتَفْرَزْ مَنْ اسْتَطَاعَتْ

उनमेंसे, तो बिलाशुभड जडन्नम तुम सभकी सजा है, पूरी सजा (६३) और लज्जिशमें डाल दे जिन पर तेरी सकत हो

مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكِهِمْ

उनमेंसे अपनी आवाजसे, और उन पर जोंक दे अपने सवारों और पियाहोंको, और शरीक बन ज

فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعَدَّهُمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا

उनका माल व औलादमें, और वा'दे किया कर.” और शैतान नहीं वा'दा करता, मगर

عُرُورًا ۖ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَى بِرَبِّكَ

मडज धोका (६४) “बेशक मेरे मुज्जिस बन्दे, नहीं है तेरा उन पर कुछ जौर.” और तुम्हारा परवरदिगार

وَكَيْلًا ۖ رَبُّكُمْ الَّذِي يُزْجِي لَكُمْ الْفَلَكَ فِي الْبَحْرِ لِيَتَّبِعُوا مِنْ

काही कारसाज है (६५) तुम्हारा परवरदिगार, जो रवां करता है तुम्हारे लिये कश्तियोंको दरियामें, कि तलाश करो उसका

فَضْلِهِ ۖ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۖ وَإِذْ أَمْسَكُ الضُّرِّي فِي الْبَحْرِ ضَلَّ

इज्जल, बेशक वोड तुम पर रहम इरमाता रहा (६६) और जब लगा तुम्हें भतरा दरियामें, तो गुम हो गये

مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا آيَاهُ ۖ فَلَمَّا جَحَّكُمْ إِلَى الْبِرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ

जिन्हें पुकारते हो मा'बूद, सिवा उसी मा'बूदे बरडकके. इर जब नजात दे दी तुम्हें भुशकी तक, तो रुभ इर लिया तुमने. और

الْإِنْسَانَ كَفُورًا ﴿۴۵﴾ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يُخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ

اِنسان ناشوکا اسی ردا (۴۵) کما تومہ اتمیانا ہے کی ہنسا ہے توم پر پورکیکا کینارا، یا بوج ہے

عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا يَجِدُ وَالَكُمْ وَكَيْلًا ﴿۴۶﴾ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَكُمْ

توم پر پورکی کا بریش، کیر ن پاؤو اپنا کوٹ کارساا (۴۶) یا کما نیر اے گئے، کی ہوبارا بےاے

فِيهِ تَارَةً أُخْرَى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيمِ فَيَغْرِقُكُمْ

تومہ اسی ہریامہ، کیر یلا ہے توم پر کیشی تود اوا، تو اسیو ہے تومہ،

بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُ وَالَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ﴿۴۷﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي

کی تومنے ناشوکی ہے۔ کیر ن پاؤوگے توم اپنا کوٹ، امارا پیاا کرنےوالا (۴۷) اور بےک مواااa

أَدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ

اوااa

عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ﴿۴۸﴾ يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ

اااa

فَسَنْ أُوْتَىٰ كِتَابًا بِبَيِّنَاتٍ فَأُولَٰئِكَ يَقْرءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ

ااa

فَتِيلًا ﴿۴۹﴾ وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَ

ااااااااااااااااااااااااااااااااااa

أَصْلُ سَبِيلًا ﴿۵۰﴾ وَإِنْ كَادُ الْيَقْتَنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ

اااااااااااااااااa

لِتَقْتَرَىٰ عَلَيْنَا غَيْرَهُ ۗ وَإِذْ لَا تَجِدُ وَكَ خَلِيلًا ﴿۵۱﴾ وَلَوْلَا آتُ

اااااااااااa

ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدَّتْ تَرُكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ﴿۵۲﴾ إِذَا لَدَّ قُنُوكَ

اااااa

ضَعْفَ الْحَيَاةِ وَضَعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿۵۳﴾

اااااa

وَأَنْ كَادُوا لَيَسْتَفِرُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا

और करीब था कि भिसका दें तुम्हें इस अराज़ीसे, ताकि निकाल दें तुम्हें उससे, और औसेमें

يَلْبَثُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ سُنَّةٍ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ

वोड भी न ढडरते तुम्हारे बा'द, मगर कुछ ही (७६) दस्तूर उनका, जिन्हें भेजा हमे तुमसे पहले, अपने

ع ۸

رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝ أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِ الشَّمْسِ

कई रसूल, और न पाओगे हमारे दस्तूरमें तब्दीली (७७) पाबन्दी करो नमाज़की, सूरज ढलनेसे

إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝

रातकी तारीकी तक. और इजराकी नमाज़, कि बिवाशुभइ इजराकी नमाज़का वक्त डालिरीका है (७८)

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ ۗ عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ

और रातकी, तो तडजुद पहो उसमें, मज़ीद हुकम है तुम्हीं पर. अनकरीब तुम्हारी जगड बनाअगा तुम्हारा परवरदिगार,

مَقَامًا مَحْمُودًا ۝ وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي

मकामे महमूदको (७९) और हुआ करो कि “परवरदिगारा अन्दर ले जा मुझे तू सखी तरड, और बाहर निकाल तू

مُخْرَجَ صِدْقٍ وَأَجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا ۝ وَقُلْ

सखी तरड, और बना दे हमारा अपनी तरडसे मददगार ताकत” (८०) और कडो

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝ وَنُنزِّلُ

कि “आ गया डक और मिट गया बातिल. भेशक बातिल मिटनेकी थीज है” (८१) और नाज़िल इरमाते

مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شَفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ

हैं डम कुरआन, जो कि शिफा व रडमत है माननेवालोंके लिये, और नहीं थडाका करता अंधेरवालों

إِلَّا خَسَارًا ۝ وَإِذَا أَعْمَنَّا عَلَى الْإِنْسَانِ نَحْنُ بِنَائِهِ ۗ وَ

में, मगर नुकसानका (८२) और जब थआम इरमाया डमने थआन पर, तो बेरुभीकी, और

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يُوسَىٰ ۝ قُلْ كُلُّ يَعْلُ عَلَىٰ شَاكِلَتِهِ قُرْبَكُمْ

अपनी तरड डट गया. और जब पहोंथी उसे भराभी, तो ना उम्मीद हो गया (८३) कड होकि डर अक अमल करता है अपने डेडेका. तो तुम्हारा

ع ۹

أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۗ قُلْ

परवरदिगार खुभ जानता है, कि कौन ज़्यादा राडका पाने वाला है (८४) और पूछते हैं तुमसे डडके बारेमें, जवाब हो

الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿۸۵﴾ وَلَكِنْ

કિ “રૂહ મેરે પરવરદિગારકે હુકમસે હૈ”, ઓર નહીં દિયા ગયા તુમ્હે ઇલ્મસે, મગર થોડા (૮૫) ઓર અગર હમ

شَدْنَا لَنْدَهَبْنَ بِالذِّمَىٰ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ نَمًّا لَا يَحْدُكَ بِمِ عَلَيْنَا

ચાહતે તો ફના કર દેતે, જો વહી ભેજી હૈ હમને તુમ્હારી તરફ, ફિર ન પાતે તુમ અપના હમારે યહાં

وَكَيْلًا ﴿۸۶﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّ فَضْلًا كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿۸۷﴾ قُلْ

વકીલ (૮૬) મગર તુમ્હારે પરવરદિગારકી રહમત હૈ, બેશક ઉસકા ફઝલ તુમ પર બડા રહા કિયા (૮૭) એ’લાન કર

لَيْنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ

દો કિ અગર ઇકઠ્ઠા હો જાએ સારે ઇન્સાન ઓર જિન્નાત, ઇસ પર કિ લે આએ ઇસ કુરઆનકી તરહ,

لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿۸۸﴾ وَقَدْ صَرَّفْنَا

તો ન લાએગે એસા, ગો હોજાએ બા’જ બા’જકે પુશ્ત પનાહ (૮૮) ઓર બેશક કઈ તરહ

لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا

સે બયાન ફરમાયા હમને લોગોંકે લિયે ઇસ કુરઆનમેં હર બાત, તો ઇન્કાર હી કર દિયા બહોતોંને

كُفُورًا ﴿۸۹﴾ وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ

નાશુકીસે (૮૯) ઓર બોલે કિ હરગિઝ ન માનેગે હમ આપકો, યહાં તક કિ બહાદો હમારે લિયે ઝમીનસે

يَنْبُوعًا ﴿۹۰﴾ أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّجِيلٍ وَعَنْبٌ فَتَقْفِرَ الْأَنْهَارُ

કોઈ ચશ્મા (૯૦) યા હો આપકા બાગ ખજૂર ઓર અંગૂરકા, ફિર બહાદો નહરેં

خَلْفَهَا تَقْفِيرًا ﴿۹۱﴾ أَوْ تَسْقُطَ السَّمَاءُ كَمَا زَعَمْتُمْ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ

ઉનકે દરમિયાન ખુબ (૯૧) યા ગિરાદો આસ્માનકો જેસા કિ કહા કિયે હો હમ પર, ટુકડે ટુકડે યા

تَأْتِي بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ﴿۹۲﴾ أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرِفٍ

લેઆઓ અલ્લાહ ઓર ફરિશ્તોંકો આમને સામને (૯૨) યા હો તુમ્હારા કોઈ ઘર સોનેકા,

أَوْ تَرَفِّي فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرَقِيْبِكَ حَتَّىٰ تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا

યા ચઢ જાઓ આસ્માનમેં. ઓર હમ ન માનેગે તુમ્હારે ચઢ જાનેકે સબબ, યહાં તક કિ ઉતાર કર લાઓ હમ પર કોઈ

مَّقْرُوءَةً قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴿۹۳﴾ وَمَا مَنَعَهُ

કિતાબ, કિ હમ ઉસે પઢે. જવાબ દો કિ “પાકી હૈ મેરે પરવરદિગારકી, મેં હૂં કયા, બજુલ એક ઇન્સાનકે, જો રસૂલ હૈ (૯૩) ઓર નહીં રોકા

النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ ۚ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ

لوگوں کو ایمان لانے سے، جب کہ آگاہی کے پاس لایا گیا، مگر یہ کہ ان کا کول رہا، کہ کیا اللہ نے

بَشَرًا رَسُولًا ﴿۹۳﴾ قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مُلْكٌ مِّمَّنْ يَمْسُونَ مَطْمِئِينَ

بشر کو رسول (۹۳) جہاں ہے وہی کہ اگر لوگوں میں سے کوئی ایسا ہے،

لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿۹۴﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا

تو اگر وہی ہم پر آسمان سے کوئی ایسا رسول (۹۴) بھیج دے کہ اللہ کا

بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿۹۵﴾ وَمَنْ يَهْدِ

میرے اور تمہارے درمیان۔ بیشک وہی اپنے بندوں کو جاننے والا ہے اور

اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ

اللہ ہے وہی سچا ہے اور جو گمراہ کرے گا تو تم نہ پائے گے ان کے

وَتَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُسًىٰ ۚ ذٰلِكُمْ مَّا وَوَهُمْ

اور ہرگز ان کے لیے اللہ کے دن ان کے سر کے پیچھے، اور ان کے

جَهَنَّمَ كَمَا خَبَتِ زُرْدُهُمْ سَعِيرًا ﴿۹۶﴾ ذٰلِكَ جَزَاءُ وَّهُمْ بِآيَاتِهِمْ كَفَرُوا

جہنم کی طرح جلائیے گا ان کے سر کے پیچھے، اور ان کے

بِآيَاتِنَا ۚ قَالُوا إِذْ أَنْكَرْنَا عِظَامًا وَرُفَاتًا ۚ إِنَّا لَبَعُوثُونَ خَلْقًا

آپنی آیتوں سے، اور ان کے کہ ہم نے ان کے ہڈیوں اور ہڈیوں کو

جَدِيدًا ﴿۹۷﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

نیا ہے؟ اور ان کے کہ اللہ نے آسمانوں اور زمینوں کو

قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ

ساختار رکھتا ہے ان کے لیے، اور ان کے کہ اللہ نے ان کے لیے

فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿۹۸﴾ قُلْ لَوْ أَنَّكُمْ تَبْلُغُونَ حَرَابِينَ رَحْمَةً

میں سے انکار کرتے تو ان کے کہ ان کے لیے اللہ نے

رَبِّي إِذْ لَا مَسْكَتُمْ خَشِيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿۹۹﴾

میرے سے انکار کرتے تو ان کے کہ انسان بے رحم ہے

الاصح

=

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَسَأَلَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ

और बेशक ही हमने मूसाको नौ निशानियां रौशन, तो पूछ लो बनी इस्राईलसे, जब वोह आये

جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَكْظُمُكَ يَوْمَئِذٍ مَسْحُورًا ۝ قَالَ

ये उनमें तो बोला उन्हें फिरऔन, कि बिलाशुभ में अज़र भयाव करता हूं आपके बारेमें ऐ मूसा, कि जादूका मुआमला है (१०१)

لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَآ أَنزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ

जवाब दिया, कि सय यह है कि तू भुभ जान युका है, कि नहीं नाजिल इरमाया इन सबको, मगर आस्मानों और जमीनके पालनेवालेने,

وَإِنِّي لَأَكْظُمُكَ يَوْمَئِذٍ مَثْبُورًا ۝ فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَقِرَ مِنْهُ مِنَ الْأَرْضِ

आंभे भोलनेको, और बिलाशुभ में भयाव करता हूं तुजे ऐ फिरऔन, कि डलाक हो जायेगा (१०२) तो उसने याहा कि भिसका टे उन्हें

فَاعْرَفْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝ وَقُلْنَا مَنْ بَعْدُ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ

अराजीसे, युनान्हे डिओ दिया हमने उसको और उसके सब साथियोंको (१०३) और इरमा दिया उसके भा'द बनी इस्राईलको

اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جَنَّا بِكُمْ لَفِيفًا ۝ وَبِالْحَقِّ

कि रलो सडो इस जमीनमें, फिर जहां आया आभिरतका वा'दा, ले आये हम तुम्हें लपेट कर (१०४) और हमने बिल्कुल

أَنْزَلْنَا وَبِالْحَقِّ نَزَّلْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَقُرْآنًا

दीक उंचे नाजिल किया, और वोड दीक ही नाजिल हुवा, और नहीं भेजा हमने तुम्हको, मगर भुशाभवरी सुनाता और डराता.. (१०५).. और कुरआनको हम

فَرَقْنَا لِتَفْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْتَبٍ وَنَزَّلْنَا تَنْزِيلًا ۝ قُلْ أَمِنُوا

ने जरा जरा कर के भेजा, ताकि तुम पढो उसे लोगों पर ठडर ठडर कर, और हमने उसे आडिस्ता आडिस्ता कर के उतारा (१०६) केड दो कि उसे

بِمَآ أَوْلاؤُكُمْ مِمَّا إِنْ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذْ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ

मानो या न मानो. बेशक जिन्हें दिया गया है इल्म उसके पढलेसे, जब तिलावत किया जाता है

يَخْرُونَ لِلذَّقَانِ سُجَّدًا ۝ وَيَقُولُونَ سُبْحٰنَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعْدُ

कुरआन उन पर, तो गिर जाते हैं होडीके बल सजदा करते हुअे (१०७) और केडते हैं पाकी है हमारे परवरदिगारकी, बेशक हमारे

رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝ وَيَخْرُونَ لِلذَّقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۝

परवरदिगारका वा'दा किया धरा है (१०८) और गिरते हैं होडीके बल रोते हैं, और बढता जाता है उनके दिलका लुकाव (१०८)

قُلْ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلِلَّاسْمِ الْحُسْنٰى

तुम केड दो, कि तुम लोग अल्लाह केड कर पुकारो या रडमान केड कर पुकारो, जो कुछ केड कर पुकारो, सब अच्छे नाम उसीके तो हैं.

وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتُ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝۱۰

और न खिलवाओ अपनी नमाजमें, और न हुसहुसाव उसमें, और उनके बीचका रास्ता रभो (११०)

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي

और कहते रहो कि सारी उम्द अल्लाहकी, जिसने न रभा अपनी कोई औलाद, और न कभी रहा उसका कोई शरीक

الْمَلِكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وِليٌّ مِنَ الدُّنْيَا وَكَبِيرًا ۝۱۱

बादशाहीमें, और न कभी रहा उसका मददगार कमजोरीकी बिना पर, और बोलते रहो उस बडेकी तकबीर (१११)

سُبْحَانَ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمَلِكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وِليٌّ مِنَ الدُّنْيَا وَكَبِيرًا ۝۱۱

सूरअे कइक मकिकया

नामसे अल्लाहके बडा मउरभान बफ्शनेवाला

आयात ११० रुकूअ १२

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَدُنْجَا ۝۱۲

सारी उम्द अल्लाहकी, जिसने उतारा अपने बन्दे पर किताबको, और न दी उसे कुछ भी कछ (१)

فِي مَا لَيْدَنَ بِأَسَاسٍ يَدِيًّا إِنْ لَدُنَّهُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ

सरापा रास्त, ताकि उरा दे अल्लाहके पाससे आनेवाले सप्त अजाबसे, और भुशबबरी देदे माननेवालोंको, जो

يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنْ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝۱۳ فَالَّذِينَ فِيهِ أَيْدٍ ۝۱۴

काम करें खियाकतवाले, कि बिलाशुभउ उनके खिये अरुथा षवाब है (२) जिसमें उमेशा उडरेंगे (३) और

يُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝۱۵ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا

उरा दे उन्हे, जो बका किये कि बनाया है अल्लाहने अपनी औलाद (४) न उन्हे उसका कुछ र्थलम है और न

رَأْيًا بِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۝

उनके बापदादोंको, कितनी बडी बोली निकल पडी उनके मुँडसे. नही बोलते मगर बस जूट (५)

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسًا عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمَرُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ

तो क्या कहीं भेल जाओगे अपनी जान पर उनके पीछे, अगर कुङ्कारने न माना र्थस भातको

أَسْفًا ۝۱۶ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ

सदमा कर के ? (६) बेशक उमने पैदा करमाया जमीन पर उसका सिंगार, ताकि उम आजमाअें कि उनमें कौन काममें सब

عَمَلًا ۝۱۷ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝۱۸ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ

से अरुथा है (७) और बेशक उम जरूर कर देनेवाले हैं जो कुछ उस पर है मैदाने बन्जर (८) क्या तुम्हें पता यला ? कि

أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۙ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ

ہوٹ اور واہی اے رکیم والے تھے، ہماری نشانیاں سے انہوں نے (۷) جبکہ پناہ لی تھی ان جوانوں نے

إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا

ہوٹ کی طرف، تو دہاکی کی پروردگار دے ہمیں اپنی طرف سے رحمت، اور سامان کر دے ہمارے لیے، ہماری

رِسْدًا ۙ فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۙ ثُمَّ

مواہلہم سے راہ پا جانے کی (۱۰) تو تھکی ماری ہم نے ان کے کانوں پر ہوٹ میں کئی سال (۱۱) ڈیر ڈیا

بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِئُوا أَمَدًا ۙ لَمَّا نَحْنُ مُخْتَصِمٌ

ہم نے انہیں بھیجے تاکہ ہم جان سکیں کہ کون سا گروہ نے جو کچھ گنے ہے مدت کو، جس میں وہ بے خبر (۱۲) ہم جاگیر کیے تھے

عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۙ إِنَّهُمْ فَتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَرَدُّنَاهُمْ وَهُدًى ۙ

تو تم پر ان کا واقعہ ایک ایک ہوٹ کرنا چاہتا ہے، مان گئے تھے اپنے پروردگار کو، اور بڑی ڈیڑھایت ہم نے فرما دی تھی (۱۳)

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ

اور ہم نے ہار س دی ان کے دلوں پر جبکہ بڑے ہو گئے، ڈیر ہو لیے کی ہمارا پروردگار آسمانوں اور زمین کا پالنے والا ہے،

لَنْ نَدْعُوا مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذْ أَشْطَطَّا ۙ هُوَ لَا

ہم ہرگز ان سے پکارنے کے لئے نہیں جو اس کو چوڑ کر ما'بوء بنا ہے گئے ہیں، کی ایسا کرنے پر ہم نے بڑی بے جا بات کہی (۱۴) اس

تَوْمِنًا أَخَذُوا مِنَ دُونِ اللَّهِ لَوْلَا يُاتُونَ عَلَيْهِمْ مُسْلِمِينَ ۙ

ہماری کوشش سے بنا لیے بھوت سے ما'بوء اڈواڈ سے اڈواڈ۔ کچھ نہیں لاتے ان پر کوئی روشن ڈلیا۔

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۙ وَإِذْ اعْتزَلْتُمُوهُمْ وَمَا

تو کون جڑاڈا اڈہر والوا ہے اس سے، جس نے گڈ لیا اڈواڈ پر جڑ (۱۵) اور جب کینارا کڈا ہو چوڈے، تو ان سے

يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ

اور جو کچھ بڈ اڈ پوڈے اڈواڈ کے لیا، تو پناہ لے لو ہوٹ میں، آم کر دے گا تمہارے لیے تمہارا پروردگار اپنی رحمت سے،

وَيَهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۙ وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَرْتُورُ

اور مڈلٹھا کر ما دے گا تمہارے لیے تمہارے کام میں آسانا (۱۶) اور سورج کو دے ہوڈے کی جب نیکوا تو بڈ کر جاتا ہے

عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذْ اعْرَبْتُمْ قُرْبَهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

ان کے ہوٹ سے ڈاڈینی طرف، اور جب ڈوا، تو کتارا جاتا ہے ان سے باڈے کو،

عَلَىٰ أقرِهِمْ لَنَنخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝۱۶ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّاٰهُمْ

युके थे उनके मुआमलेमें, कि हम ज़रूर बनाअेंगे उनकी दरगाह पर मस्जिद (२१) अनकरीब चन्द लोग कहेंगे कि तीन, और यौथा उनका

क़िस्मत. और कहेंगे पांच, छटा उनका कुत्ता, बेदेभे तीर तुक्का. और कुछ कहेंगे

सबै. और ताम्रुहें क़िस्मत क़ुल रबीّیّ اعلم بعدّتهم قایعاهم الاقلیل

सात, और आठवां उनका कुत्ता. केह दो कि मेरा परवरदिगार भुभ जानता है, उनके शुमारको, और उनहें नही जानते मगर थोडे लोग..

فَلَا تُشَارِ فیهِمُ الاءِراءُ ظاهراً ۝۱۷ وَلَا تُسْتَفْتِ فیهِمُ مِنْهُمْ اءِءًا ۝۱۷

तो तुम न बहस किया करो उनके बारेमें, मगर जो ज़ाहिर कर दी गथे बहस. और न पूछा करो उनके बारेमें ठन यखूदियोंमेंसे किसीसे (२२)

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَئِیٍّ اِنِّیُّ فاعِلٌ ذلِكَ عَدَا ۝۱۸ اِلَّا اَنْ یَّشَاءَ اللّٰهُ

और न कहा करो किसी अपने याडेको, कि मैं कल यह कर दूंगा (२३) मगर यह कि अल्लाह भी याडे.

وَاذْكُرْ رَبَّكَ اِذْ اَسَّیْتُ وَقُلْ عَلَیَّ اَنْ یَّهْدِیْنَ رَبِّیُّ لِاَرْبَابٍ مِنْ

और याद करो अपने परवरदिगारको, जब भूल गये छे, और कही कि करीब है कि राह देगा मुजे मेरा परवरदिगार ठससे भी ज़्यादा, जो

هذارسدًا ۝۱۹ وَكَبُتُوا فِی كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ وَاِزْدَادُوا سَعًا ۝۲۰

नजदीक है छिदायतके (२४) और वोह लोग रहे अपने पहाडकी भोहमें तीनसौ बरस, और मज़ीद नौ साल (२५)

قُلِ اللّٰهُ اعلم بما لَبُتُوا ۝۲۱ لَهٗ غِیْبُ السَّمٰوٰتِ وَاَلْاَرْضِ اَبْصَرُ بِهِ وَا

केह दो कि अल्लाह भुभ जानता है कि कितना रहे. उसीके लिये है गैब आस्मानों और जमीनका. क्या ही देभता और

اَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَّلِیٍّ ۝۲۲ وَلَا یُشْرِكُ فِی حُكْمِهِ اءِءًا ۝۲۳

कैसा सुनता है. नही है उनका उसे छोड कर कोठे वाली, और नही शरीक करता अपने हुकममें किसीको (२६) और

اَنْتَ لَمَّا اَوْحٰی اِلَیْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدَّلَ لِكَلِمٰتِهِ ۝۲۴ وَلَکِنْ

तिलावत करते रहो जो वही की गथे तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे परवरदिगारकी किताब. कोठे नही बदलनेवाला उसके किसी कलिमेका.. और

تُحٰدٍ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحِدًا ۝۲۵ وَاَصْبِرْ نَفْسَکَ فَعَالِیْنَ یَدْعُونَ رَبَّهُمْ

न पाओगे तुम उसको छोड कर कोठे पनाहगाह (२७) और अपनेको पाबन्द रहओ उनकी सोडभतका, जो पुकारा करें अपने परवरदिगारको

بِالْعَدٰوَةِ وَالْعِشْرِیِّ یُرِیْدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تُعَدُّ عِیْنَکُمْ عَنْهُمْ تَرِیْدًا

सुभ्छो शाम, तालिब हें उसकी जातके, और न हटें तुम्हारी आंभें उनसे, कि भ्वालिशमन्द करार पाओ

زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطْعَمَنَ أَعْفَلْنَا قَلْبًا عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبِعْ

दुनियावी जिनगी की आराधना और न मानो कदापि उसका कि गफलत में पड़ा रहने दिया हमने उसको दिल को अपनी याद से, और वोड गुलाम हो गया अपनी

الذکر

هُوْبُهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۖ وَقِيلَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ مَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ

प्राडिशक, और उसका काम उदसे भाडर होना रड (२८) और बता दो कि यड डीक डीक भात तभुडरे परवर दिगार की तरफ से है, तो जिसकी भुशी है, वोड तो माने

وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهَا بِهَمِّ سُرَادِ قَوْمِهَا

और जो भुश नहीं, तो वोड उ-कार कर दे. भेशक उमने मुडय्या करमा लिया है अधेरवा लोके लिये आग, डि घेर लिया उन-हें जिसकी यडार दीवारीने.

وَإِنْ يَسْتَعْجِنُوا يُعَاثُوا بِسَاءِ كَالَّذِينَ يَشْوَى الْوُجُوهُ بِسَسِ الشَّرَابِ

और अगर पानी मांगे तो पानी दिया जअगे जैसे पिघलती भौलती घात, जो भून डाले उनके मुंडको. केसा भुरा पानी है.

وَسَاءَتْ مَرْتَفَقًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ

और कितनी भुरी जगड है (२८) भेशक जिन-होंने माना, और लियाकतके काम किये, तो बिवाशुभड डम जाअे नही करते

أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَدْتٌ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ

उसके षवाभको जिसने अथ्य काम किया (३०) वोड हैं जिनके लिये हैं सदा भडार भाग, भेडती हैं जिनके नीचे

الْأَنْهَارِ يُجْرُونَ فِيهَا مِنْ آسَاوَرٍ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا

नडरें, पडनाअे जअेंगे उसमें कडे सोनेके, और पडनेंगे कपडे सभज रंगके,

قِنَّ سُنْدُسٍ وَاسْتَبْرَقٍ مُتَّكِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَابِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ

रेशमी करेभ और पोतके तडिया लगाअे हूअे, वहां अपने अपने तप्त पर, क्या भुभ षवाभ है.

۳۵

وَحَسُنَتْ مَرْتَفَقًا ۖ وَاصْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاحِدِهِمَا

और कितनी अथ्य आरामगाड है (३१) और उन-हें मिघाल सुनाओ दो शभसोंकी, डि जिनमेंसे ओक को उमने दो भाग दिये

جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۖ

अंगूरोंके, और भुभ घनी ठडाताभन्हीकी उमने उनकी भजूरके दरपन्तोंसे, और दोनों भागके दरमियान बनादी उमने भेती (३२)

كَلَّمَا الْجُنَّتَيْنِ اتَّتْ أَكْلَاهَا وَلَمْ تَطْلَمْ مِنْ شَيْءٍ وَفَجَّرْنَا خِلْمًا مَهْرًا ۖ

दोनों भाग लाअे भुभ अपने इल और कुछ कमी न की, और निकाल दी उमने उनके दरमियान नडर (३३)

وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ قَالُوا أَعْرُ

और था वोड शभस इला इला, तो वोड भोला अपने साथीसे बातचीत करते करते, डि में तुजसे मालमें ज़्यादा और जथ्यामें भडा

عَدُوِّمْ يَسْ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝ مَا أَشْهَدُ لَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ

दुश्मन हैं। कितना बुरा है अंधेरवालोंका बदल (५०) मैं ने उन लोगोंकी न तो गवाह बनाया था आस्मानों

وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مَتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ

और जमीनकी पैदाईश, न भुद उनकी पैदाईशका। और न मुझे जेभा कि बनाओं, गुमराह करनेवालोंको

عَضُدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ

कुवते बाजू (५१) और जिस दिन इरमायेगा कि पुकारो अपने इर्जी मेरे शरीकोंको, तो उन्होंने आवाज

فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ

ही, फिर भी उन्हें जवाब न दिया और कर दिया डमने उनके दरमियान मैदाने डलाकत (५२) और देभा मुजरिम लोगोंने

النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا وَلَمْ يَجِدْوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝ وَقَدْ

आग, तो समज गये कि वोह बिलाशुभड उसमें पडनेवाले हैं, और न पाया उससे फिरनेकी जगड (५३) और डमने

صَرَفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ

बेशक तरह तरहसे बयान किया इस कुरआनमें लोगोंके लिये, डर मजभूनको। और ठन्सान सब

الْإِنْسَانُ أَكْثَرُ شَيْءٍ جَدَلًا ۝ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا

से ज़्यादा जगडावू है (५४) और नहीं रोक रभा है लोगोंको मान जानेसे, जबकि आ गर्थ

إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ

उनके पास छिदायत, और यह कि मग़िरेत याहें अपने रबकी, मगर यह कि आ ज़ाये उनके पास

الْأُولَىٰ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ

पहलोंका दस्तूर, या अजाब उनके सामने आ ज़ाये (५५) और डम नहीं लेजते रसूलोंको

إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَيَجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ

मगर भुशभबरी सुनानेवाले और डरानेवाले। और जगडते हैं जिन्होंने कुङ कर रभा है बातिलसे,

لِيُذْهِبَ حُضُوعًا بِهٍ الْحَقِّ وَاتَّخَذُوا إِلَهًا وَمَا أَنْذَرُوا هُرُوعًا ۝ وَ

ताकि बातिल बना दें उससे डकको, और बना लिया है मेरी आयतोंको और जो डराये गये हैं, सब को डहा (५६) और

مَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا

कोन उससे बढ कर अंधेरवाला है, जिसे याद दिवाई गर्थ उसके रबकी आयतें, तो उसने मुंड डेर लिया उनसे, और भूल गया जो

قَدَّ مَتَّ يَدُهُ إِتَا جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ

पडले त्मेज युके उसके डाय. भेशक डमने डाल दिया उनके दिलों पर गिलाक, कि समज सकें कुरआन,

وَفِي إِذْ أَنْهَمُ وَقَرَأْ وَأَاتُ تَدُّعُهُمْ إِلَى الْهُدَى فَلَنْ

और उनके कानोंमें बडरापन. और अगर बुलाओ उन्हें छिदायतकी तरफ, तो भी डरगिज

يَهْتَدُوا إِذَا أَبَدًا ۝۵۰ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ط كَو

राड न पाअंगे कभी (५०) और तुम्हारा परवरदिगार भडिरेत इरमानेवाला रडमतवाला है. अगर उनकी

يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلُ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ

पकड करता जो उन्होंने कमा रभा है, तो जडही करता उन पर अजाभा. बडिके उनके लिये

مَوْعِدٌ لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْيِلًا ۝۵۱ وَتِلْكَ الْقُرَى

अेक वा'देका वक्त है, कि न पाअंगे उसके मुकाबिलमें कोरि डिकाना (५१) और यड आभादियां हैं,

أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۝۵۲ وَإِذْ

के तभाड कर दिया डमने ठन्हे जब उन्होंने अंधेर मयाया, और कर दिया था डमने उनकी तभाडीके लिये वा'दा (५२) और जबकि कडा

قَالَ مُوسَى لِقَتْلِهِ لَا أَبْرَحُ حَتَّى أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ

मूसाने अपने जवानको, कि मैं यलता ही रहूंगा, यहां तक कि पडोच जरी दोनों दरियाओंके संगम पर,

أَوْ أَمْضَى حَقْبًا ۝۵۳ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا

या यलता ही रहूँ मुदतों (६०) युना-चे जब दोनों पडोचों संगमको, तो दोनों अपनी मछली भूल गअे

فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝۵۴ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِقَتْلِهِ

तो बना लिया उसने अपनी राड दरियामें सुरंग करके (६१) फिर जब दोनों आगे बढ गअे, तो कडा अपने जवानको कि

إِنَّا عَدَاءُكَ لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۝۵۵ قَالَ

लाओ डमारा नाशता, कि डमने पाया अपने ठस सडरसे तकान (६२) वोड बोला कि

أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا

अभ भताठये कि जब डमने पनाड ली थी यटानकी जानिभ, तो मैं भूल गया मछलीको. और नडी

أَسْنِيَهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ

भुलाया मुजे, मगर शैतानने, कि उसको याड रभूँ. और बना लिया उसने अपना रास्ता दरियामें.

عَجَبًا ۴۳ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْعُدُ فَأَرْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا ۴۴

بدا अचंभा हे (६३) जवाब दिया कि यह तो हम नहीं चाहते थे. युना-चे दोनों पलटे अपने निशाने कदम पर दूँढते (६४)

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ

तो पाया मेरे बन्दोंमेंसे एक बन्देको, दिया है हमने जिसको रहमत अपनी तरफसे, और सिखा दिया

مِن لَّدُنَّا عَلِيمًا ۴۵ قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَن تُعَلِّمَ

हमने उन्हेँ ठल्मे लहुनी (६५) कहा उन्हेँ मूसाने, “कि क्या मैं साथ रह सकता हूँ आपके ? ठस पर कि आप सिखा दें

مِمَّا عَلَّمْتَ رُسُلًا ۴۶ قَالَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۴۷

मुझे जो आपको सिखाया गया है भुब” (६६) बोले, कि “आप भिलाशुभ न कर सकेंगे मेरी हमराहीमें सभ्र (६७) और

كَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خَيْرًا ۴۸ قَالَ سَتَجِدُنِي إِن

किस तरह आप सभ्र करेंगे, जो आपके दाँठरअे ठल्ममें नही” (६८) कहा, कि “आप मुझे पाअेंगे

شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۴۹ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي

ठन-शा-अल्वाह साभिर, और न भिलाइ करूंगा मैं आपके किसी हुकमके” (६९) बोले, “तो अगर मेरे साथ रहना

فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أَحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۵۰

हे, तो न पूछियेगा मुजसे कुछ, यहाँ तक कि मैं ही बताऊँ जिक करके. (७०)

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ

तो दोनों यल पडे... यहाँ तक कि जब दोनों सवार हूअे कश्तीमें, तो उस बन्देने सूराभ कर दिया उसमें, दरयाइत किया, कि “आपने कश्ती

أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۵۱ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ

में सूराभ कर दिया ताकि दुभो दें उसके सवारोंको, यह आपने भुरी बातकी” (७१) बोले “क्या नहीं केह रभा है मैंने कि आप न कर सकेंगे

فَعِيَ صَبْرًا ۵۲ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ

मेरे साथ सभ्र.” (७२) कहा, कि “पकड न कीजिये मेरी, जिसे मैं भूल गया. और न डालिये मेर हकमें

أَمْرِي عُسْرًا ۵۳ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا اتَّيَا عُلَمَاءَ فَقَاتَلَهُ ۷ قَالَ

दुशवारी” (७३) फिर दोनों यले... यहाँ तक कि जब भिले अक लउकेको, तो उस बन्देने मार डाला उसे. कहा, “क्या

أَقْتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ۵۴

आपने मार डाला अक भे गुनाह जानको भगैर किसी जानके बदले ? कोई शुभा नहीं कि आपने बडोत भुरी बातकी” (७४)